No. of Printed Pages : 4

एम.एच.डी.-4

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

10816

जून, 2016

एम.एच.डी.-4 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *प्रथम प्रश्न अनिवार्य है । शेष किन्हीं* ***चार*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

---

1. निम्नलिखित में से किन्हीं ***तीन*** की सन्दर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *3×12=36*

(क) कविता करना अनंत पुण्य का फल है । इस दुराशा और अनंत उत्कंठा से कवि-जीवन व्यतीत करने की इच्छा हुई । संसार के समस्त अभावों को असंतोष कहकर हृदय को धोखा देता रहा । परंतु कैसी विडंबना ! लक्ष्मी के लालों का भ्रू-भंग और क्षोभ की ज्वाला के अतिरिक्त मिला क्या ! — एक काल्पनिक प्रशंसनीय जीवन, जो दूसरों की दया में अपना अस्तित्व रखता है ! संचित हृदय-कोश के अमूल्य रत्नों की उदारता और दारिद्र्य का व्यंग्यात्मक कठोर अट्टहास, दोनों की विषमता की कौन-सी व्यवस्था होगी ?

(ख) मुझे उस असलियत की बात करने दीजिए जिसे मैं जानती हूँ । ... एक आदमी है । घर बसाता है । क्यों बसाता है ? एक ज़रूरत पूरी करने के लिए । कौन-सी ज़रूरत ? अपने अंदर के किसी उसको ... एक अधूरापन कह लीजिए उसे ... उसको भर सकने की । इस तरह उसे अपने लिए ... अपने में ... पूरा होना

होता है । किन्हीं दूसरों को पूरा करते रहने में ही ज़िंदगी नहीं काटनी होती । पर आपके महेन्द्र के लिए ज़िंदगी का मतलब रहा है ... जैसे सिर्फ़ दूसरों के ख़ाली खाने भरने की ही एक चीज़ है वह । जो कुछ वे दूसरे उससे चाहते हैं, उम्मीद करते हैं ... या जिस तरह वे सोचते हैं उनकी ज़िंदगी में उसका इस्तेमाल हो सकता है ।

(ग) धर्म, नीति, मर्यादा, यह सब हैं केवल आडम्बर-मात्र,
मैंने यह बार-बार देखा था ।
निर्णय के क्षण में विवेक और मर्यादा
व्यर्थ सिद्ध होते आए हैं सदा
हम सबके मन में कहीं एक अंध गह्वर है ।
बर्बर पशु, अंधा पशु वास वहीं करता है,
स्वामी जो हमारे विवेक का,
नैतिकता, मर्यादा, अनासक्ति कृष्णार्पण
यह सब हैं अंधी प्रवृत्तियों की पोषाकें
जिनमें कटे कपड़ों की आँखें सिली रहती हैं
मुझको इस झूठे आडम्बर से नफ़रत थी
इसलिए स्वेच्छा से मैंने इन आँखों पर पट्टी चढ़ा रखी थी ।

(घ) धन का जो लोभ मानसिक व्याधि या व्यसन के रूप में होता है उसका प्रभाव अंतःकरण की शेष वृत्तियों पर यह होता है कि वे अनायास कुंठित हो जाती हैं । जो लोभ और मान-अपमान के भाव को, करुणा और दया के भाव को, न्याय और अन्याय के भाव को, यहाँ तक कि अपने कष्ट-निवारण या सुखभोग की इच्छा तक को दबा दे, वह मनुष्यता कहाँ तक रहने देगा ? जो अनाथ विधवा का सर्वस्वहरण करने के लिए कुर्क अमीन ले कर चढ़ाई करते हैं, जो अभिमानी धनिकों की दुत्कार सुनकर त्योरी पर बल नहीं आने देते, जो मिट्टी में रुपया गाड़ कर न आप खाते हैं न दूसरे को खाने देते हैं, जो अपने परिजनों का कष्ट-क्रन्दन सुन कर भी रुपए गिनने में लगे रहते हैं, वे अधमरे होकर जीते हैं ।

(ङ) भारत में वर्ण-व्यवस्था का विरोध और उस व्यवस्था के टूटने पर आपत्ति – ये दोनों बातें बहुत पुरानी हैं । कबीर के समय से ही ये दोनों बातें साहित्य में ख़ूब उभर कर आई हैं । हिन्दी, बंगला, मराठी, पंजाबी, कश्मीरी आदि भाषाओं में भक्ति-आंदोलन मनुष्य-मात्र की समानता घोषित करने वाला एक व्यापक और शक्तिशाली आन्दोलन था । यह आन्दोलन वर्णों और मत-मतांतरों में बँटे हुए सामंती समाज की व्यवस्था के विरुद्ध था, और इस व्यवस्था के कमज़ोर होने से उत्पन्न हुआ था । ग़रीब किसानों, कारीगरों, सौदागरों आदि की सक्रिय सहानुभूति से उसका प्रसार हुआ था । प्राचीन रूढ़िवाद जहाँ धार्मिक कर्मकांड को महत्त्व देता था, वहाँ यह आन्दोलन प्रेम को भक्ति और मुक्ति का आधार मानता था ।

2. नाट्य-रचना को प्रोत्साहित करने के पीछे भारतेन्दु का क्या उद्देश्य था ? 'अँधेर नगरी' का इस संदर्भ में मूल्यांकन कीजिए । *16*

3. 'स्कंदगुप्त' नाटक को केन्द्र में रखते हुए जयशंकर प्रसाद की रंग-दृष्टि पर प्रकाश डालिए । *16*

4. स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के संदर्भ में 'आधे-अधूरे' की विवेचना कीजिए । *16*

5. 'अंधा युग' नाटक के चरित्रों की प्रतीकात्मकता पर विचार करते हुए नाटक में प्रस्तुत मूल्य संघर्ष का विवेचन कीजिए । *16*

6. प्रताप नारायण मिश्र की निबंध-शैली की विशेषताएँ बताइए । *16*

7. " 'वसंत का अग्रदूत' एक हिन्दी लेखक द्वारा दूसरे हिन्दी लेखक पर लिखा गया संस्मरण है अतः इसमें संस्मरण और समीक्षा दोनों का वैशिष्ट्य दिखाई देता है ।" इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं ? *16*

8. "हिन्दी जीवनी-साहित्य में 'कलम का सिपाही' एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है ।" इस कथन की समीक्षा कीजिए । *16*

9. रिपोर्ताज की विशेषताओं को दृष्टि में रखते हुए अदम्य जीवन की समीक्षा कीजिए । *16*

10. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणियाँ लिखिए : *2×8=16*

    (क) नुक्कड़ नाटक

    (ख) 'कुटज' निबंध

    (ग) रेखाचित्रकार महादेवी वर्मा

    (घ) ऑक्टॉवियो पॉज